पटना संग्रहालय : एक परिचय

Dr. Badar Ara

Professor

Dept. of A.I.H.& Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G./ M.A. IVth **Semester ,**

Dept. of A.I.H. & Archaeology. Patna University

Paper- <u>Museology</u> (E.C.)

बिहार के सांस्कृतिक गौरव के रूप में स्थापित पटना संग्रहालय, पटना देश के कुछ जाने माने संग्रहालयों में एक है तथा अपने दुर्लभ, बहुमूल्य और विविध प्रकृति के संग्रहों के लिए विख्यात है। यही कारण है कि यह समाज के प्रबुद्ध नागरिकों, शिक्षाविदों के साथ ही बड़ी संख्या में सामान्य जन को अपनी और आकृष्ट करता है। अतीत के अद्वितीय कला संग्रह के रुप में पटना संग्रहालय निश्चित ही यहाँ आने वाले दर्शकों को महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है। सन् 1917 ई0. में पटना संग्रहालय की स्थापना बिहार और उड़ीसा के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एडवर्ड गेट द्वारा पटना उच्च न्यायालय परिसर में की गई। पटना-गया रोड (वक्तमान बुद्ध मार्ग) के पश्चिम स्थित 700X500 वर्ग फुट के भू-खण्ड पर इण्डो सारसैनिक शैली में निर्मित वर्तमान भवन में संग्रहालय दिनांक - 01 फरवरी 1929 को स्थानांतरित हुआ तथा 07 मार्च, 1929 को तत्कालीन गवर्नर महामहिम सर स्टीफेन्स द्वारा इसे जन साधारण के लिए खोल दिया गया। यह संग्रहालय भवन भारत के सुदरतम भवनों में एक है। पटना संग्रहालय एक बहुउद्देशीय संग्रहालय है। यहाँ के संग्रह को लगभग 10 वर्गीकृत प्रभागों के अन्तर्गत प्रदर्शित किया गया है, ये प्रभाग हैं :- समकालिक चित्रकला प्रभाग, प्राकृतिक इतिहास प्रभाग, भू-गर्भ प्रभाग, बुद्ध अस्थ अवशेष कलश प्रभाग, महापंडित राहुल सांकृत्यायन प्रभाग, धातु कला प्रभाग, कला वस्तु प्रभाग, चित्रकला प्रभाग, डेनियल प्रिंट प्रभाग तथा डॉ० राजेन्द्र प्रसाद प्रभाग। इस

प्रकार यह संग्रहालय सग्रह की दृष्टि से अपने आप में चुनी हुई कलाकृतियों के प्रदर्शन से युक्त है ।

1. समकालिक चित्रकला दीर्घाः- चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अक्टूबर, 2017 ई. में बिहार संग्रहालय समिति, पटना द्वारा आयोजित कार्यशाला में ख्यातिलब्ध कलाकारों यथा- जय झरोटिया, आर.एस.राधाकृष्णन, मनु पारेख, हिम्मत शाह, यूसूफ, पी.आर. दरोज. जतिन दास, धीरज चौधरी, आदि द्वारा निर्मित गाँधी जी एवं उनसे सम्बंधित चित्रों को भूतल पर स्थित दीर्घा संख्या 1 से 4 तक में प्रदर्शित किया गया है।

2. प्राकृतिक इतिहास दीर्घाः- यह प्रभाग विशेषकर बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करता है। भूतल पर स्थित इस दीर्घा में भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव - जन्तुओं यथा- बत्तख, जंगली भैंसा, तेंदुआ, घड़ियाल, हिरण, भालू, बन्दर, बाघ, सॉप, चिड़ियाँ, रंग-बिरंगी तितली एवं अन्य दुर्लभ जन्तुओं के साथ विभिन्न प्रकार के अण्डों को प्रदर्शित किया गया है। यहाँ प्रदर्शित पशु-पक्षियों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अब लुप्तप्राय हैं।

3. भू-गर्भ दीर्घाः- भूतल पर स्थित इस दीर्घा का सबसे महत्वपूर्ण प्रदर्श आसनसोल से प्राप्त 20 करोड़ वर्ष प्राचीन चीड़ प्रजाति का अश्मीकृत 53 फीट लम्बा वृक्ष है। इसके साथ ही नार्वे, श्रीलंका, ब्राज़ील, कनाडा, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, ग्रीनलैण्ड, स्पेन, फ्रांस, मैक्सिको, आदि देशों से प्राप्त विभिन्न खनिजों यथा माइक्रोलेन, ऐमेथिस्ट, लिमोनाइट, फेरस मैलकाइट, एजुराइट, क्यूप्राइट, मैग्नेटाइट, बाक्साइट, अगेट आदि को भी यहाँ प्रदर्शित किया गया है, जो यहाँ आने वाले दर्शकों का खनिजों के सम्बन्ध में ज्ञानवर्द्धन करते हैं।

4. बुद्ध अस्थि कलश दीर्घाः- पटना संग्रहालय को पवित्र बुद्ध अस्थि अवशेष को प्रदर्शित का भी गौरव प्राप्त है। इस अस्थि अवशेष कलश की प्राप्ति वैशाली के उत्खनन से वर्ष 1959-60 में हुई थी। विश्व के अनेक देशों के बौद्ध धर्मावलंबी इस पवित्र अस्थि अवशेष के दर्शन करने संग्रहालय में आते हैं। तथा अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं।

5. महापंडित राहुल सांकृत्यायन दीर्घाः- संग्रहालय के प्रथम तल पर स्थित महापंडित राहुल सांकृत्यायन दीर्घा में उनके द्वारा प्रदत्त सामग्रियों को प्रदर्शित

किया गया है। रेशमी एवं सूती कपड़े पर प्राकृतिक रंगों से बने पटचित्र, जो थंका कहलाते हैं, को विशेष रूप से यहाँ प्रदर्शित किया गया है । इन चित्रों को महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा तिब्बत के बौद्ध-मठों से लाया गया था। 17वीं- 19वीं सदी के मध्य बनाये गये वज्रयान से प्रभावित इन चित्रों के विषयवस्तु मुख्य रुप से बुद्ध, बोधिसत्व, अन्य बौद्ध देवी-देवता, लामा, धर्मगुरू, देवालय आदि हैं। यहाँ थंका चित्रों के अतिरिक्त जाईलोग्राफ, पाण्डुलिपि, धातु प्रतिमाएं, काष्ठ निर्मित उत्कीर्ण पट्टिकाओं को भी प्रदर्शित किया गया है। पटना संग्रहालय में प्रथम सात दलाई लामाओं तथा बौद्ध आचार्यों यथा-नागार्जुन, धर्मकीर्ति, नरेन्द्र, दिग्नग, आदि के थंका चित्रों का संग्रह है।

6. धातु कला दीर्घाः- प्रस्तर कला के समानान्तर धातु शिल्प का विकास भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ। प्रस्तर की कलाकृतियों को बनाने के क्रम में ही धातु शिल्पकारों को भी कलाकृतियाँ बनाने की प्रेरणा मिली। अष्टधातु की प्रतिमाएं मधूच्छिष्ट अथवा लॉस्टवैक्स तकनीक से बनायी जाती थीं। अष्टधातु के लिए सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, टिन, जस्ता, पारा, सीसा का प्रयोग किया जाता था इस दीर्घा में नेपाली धातु शिल्पों को विशेष रुप से प्रदर्शित किया गया है, जिसमें बुद्ध, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर, तारा, मंजुश्री, प्रज्ञापारमिता, वसुधारा, हारिति, चक्रसंवर-वज़रवाराही, महाप्रत्यंगीर, भैरव, भैरवी, यमारि, वेणुगोपाल, लड्डू गोपाल कृष्ण-राधिका, महिषासुरमर्दिनी, हरगौरी, उमा महेश्वर, लामा, आदि की प्रतिमाओं के साथ-साथ अलंकृत दीप,ग गरुड़ विभिन्न प्रकार के मुखौटे हैं। उपर्युक्तप्रतिमाओं के अतिरिक्त इस दीर्घा में रूक्मणी, वेणुगोपाल तथा सत्यभामा की चोलकालीन काँस्य प्रतिमाओं को भी प्रदर्शित किया गया है।

7. सज्जा कला दीर्घाः- इस दीर्घा में बिदरी कला, ईरानी एवं मुगलकालीन टाईल्स, कट-ग्लास, सीवान जिले के मृदपात्रों सहित कलात्मक वस्तुओं के अनेक नमूने प्रदर्शित किये गये हैं। इस दीर्घा में प्रदर्शित अधिकांश प्रदर्श बेतिया राज से सम्बन्धित हैं, जिन्हें भेंट स्वरुप पटना संग्रहालय को दिया गया था । इसके साथ ही इस दीर्घा में प्रथम विश्वयुद्ध से सम्बंधित सामग्रियों तथा आदिवासी जनजीवन से सम्बन्धित वस्तुओं को भी प्रदर्शित किया गया है।

8. चित्रकला दीर्घाः- पटना संग्रहालय , पटना की इस दीर्घा में विभिन्न चित्रों के नमूनों का संग्रह है। इस दीर्घा में प्रारंभिक चित्रकला के नमूनों यथा-भीमबेठका, कौवाडोल, अजंता आदि को द्वितीयक माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। यहाँ पर प्रदर्शित राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी, दिल्ली और पटना शैली के चित्र कलानुरागियों के आकर्षण का केन्द्र हैं। ये सभी चित्र कागज पर चित्रित हैं। पटना कलम शैली का विकास पटना में ही हुआ तथा इसकी विषयवस्तु मुख्यतः सामान्य जनजीवन पर आधरित थी। सन 1760 ई० से 20वीं सदी के मध्य बने ये चित्र तत्कालीन स्थानीय जन-जीवन के जीवन्त उदाहरण हैं।

9. डेनियल प्रिन्ट दीर्घाः- इस दीर्घा में थॉमस डेनियल तथा विलियम डेनियल द्वारा बनाये गये चित्रों का प्रदर्शन किया गया है। थॉमस डेनियल और विलियम डेनियल विश्व के महान चित्रकार थे। इनका जन्म ब्रिटेन में क्रमशः 1749 ई. एवं 1769 ई. में हुआ था। 1784 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आदेश पर उन्होंने यहाँ के लगभग सभी स्मारकों का चित्र तैयार किया, जिसमें जामा मस्जिद, दिल्ली, महाबलिपुरम का मंदिर, आगरा का किला, गोलघर, पटना के गंगा तट, मुण्डेश्वरी मंदिर, अजगैबीनाथ मंदिर, एलोरा की गुफा, एलिफैन्टा की गुफा, ताजमहल, आदि के चित्रों को इस दीर्घा में प्रदर्शित किया गया है।

10. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद दीर्घाः- इस दीघा में देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति के प्राप्त उपहारों को प्रदर्शित किया गया है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को उनके राष्ट्रपतित्व काल में देश-विदेश से प्राप्त मानपत्र, मानद् उपाधियाँ, उपहार, आदि यहाँ आने वाले दर्शकों, जिज्ञासुओं के आकर्षण का केन्द्र हैं। इस दीर्घा में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति श्री जॉन एफ० केनेडी, उनकी पत्नी एवं इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ के द्वारा प्राप्त उपहार प्राप्त भी प्रमुख है।

11. शोध एवं प्रकाशन प्रभाग:-- पटना सग्रहालय के भूतल पर स्थित बिहार रिसर्च सोसायटी सम्प्रति शोध एवं प्रकाशन प्रभाग, पटना संग्रहालय की स्थापना 20 जनवरी 1915 को एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल के अनुरुप की गयी थी। यहाँ पर इतिहास, पुरातत्व, दर्शन, भाषा विज्ञान, आदि विषयों पर पुस्तकों एवं शोध पत्रिकाओं का विशाल संग्रह है जो शोधार्थियों एवं छात्रों के अध्ययन के

लिए उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के द्वारा तिब्बत से लायी गयी बौद्ध पांडुलिपियों का भी विशाल संग्रह है।

इस प्रकार पटना सग्रहालय मानव सभ्यता की विशिष्ट सामग्रियों को समग्रता में देखने, समझने और अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।